PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 4, ISSUE 1

श्री रामचन्द्रार्चनम् स्त्रोत्र में श्री राम का वर्णन

प्रियंका वी. चौहान
(एम.ए., बी.एड., एम. फील.)
पीएच. डी. विधार्थीनी संस्कृत विभाग
नलिनी अरविंद एन्ड टी. वी. पटेल
आर्टस कोलेज वल्लभ विधानगर
(गुजरात) भारत

प्रस्तावनाः

'पुरुषोत्तम' श्री राम को पुरुषो में उत्तम कहा गया है। श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाते हैं। जगत के अति उच्च एवम सर्वोच्च गुणों का समन्वय अर्थात् राम का चरित्र। कल्पना भी ना कर सको ऐसा उनकाचरित्र है। वे केवल कल्पना का विषय नहि बल्कि वास्तविक विषय है। रामचरित्र जितना पवित्र चरित्र जगत में कदाचित हि देखने मिलेगा।

''श्री रामचन्द्रार्चनम्'' स्तोत्र में कविश्री वासुदेवने श्रीराम की स्तुति इस प्रकार की है।।

''सौभद्र सत्येश्वर सोहदार्द
कृते समेषां च समानभव।
एवं रसज्ञे भज भक्तिपूर्वम्
श्री राम सत्यव्रत राघवेति।।

अर्थात्-

जैसे की राम के शुभाकारी, सत्य के स्वामी, सहृदयी सब के लिए समानभाव रखनेवाले सत्य का पालन करनेवाले उपरांत सभी देवों अन्य द्वारा भी जीन के चरणकमल वंदन करने योग्य है। ऐसे सुंदर, खुश रहनेवाले और दूसरो को मान देनेवाले और विकारोसे रहित ऐसे राम के नाम का तुम अमृतपान करो, भजते रहो ऐसा कवि अपनी जिह्वाको कहते हैं।

श्री राम के स्वरुप का वर्णन।

कन्दर्पकोट्याधृतरुपवन्तम्।
मायामनुष्य मधुरं भज त्वम्।
पीयुषपानं परमं रसज्ञे
श्री राम सत्यव्रत राघवेति।।

करोडो कामदेव जीतना सुंदर उनका स्वरुप है। अपनी माया के द्वारा मनुष्यरूप धारण करनेवाले ऐसे उनकी राक्षसराज विध्वंस के लिए आवश्यकता थी। वो विध्वंस मनुष्य के बिना दुसरा कोई नहीं कर सकता ऐसा उनको आशीर्वाद था। इसिलिए वाल्मीकिने रामका मनुष्य की तरह चरित्रचित्रण कियाहै। भगवानने अवतार लीया, लेकिन उस अवतार के साथ पूर्वग्रह बिना उतना तादात्म्य पाया है कि वे अपना देवत्व भी भूल गये है। जब देवता उनकी स्तुति करते है '' आप भगवान है'' तब राम मना करते हैं और कहते हैं कि ''आत्मानं मानुषं मन्ये रामं दशरथात्मजम्।।''

वाल्मीकि रामायण दर्शन में परम पूज्य पांडुरंग शास्त्री श्री राम की लीला का वर्णन करते हुए कहते है कि भगवान की लीला लीखने के लिए महर्षि को अपना तप छोडने की जरूरत नहीं थी जिसके पेट में चौदहलोक रहते है- समस्त जगत है- अखिल ब्रह्मांड है ऐसा जिसका करिश्मा है। जिसका कौशल्य अजब है। तोतेको नीला रंग औरहंसको सफेद रंग जिसने दीया है। मयूर पे ऐसा सुंदर चित्रण किया है कि जो बडा कलाकार भी नहीं कर सकता। नियमित सूर्योदय-सूर्यास्त और हवाकी गति जीसकी वजह सेहोते हैं। चारवेद, उपनिषद और अष्टादश, पुराण जिसकी भव्यता समझाते है वे भगावन रामचन्द्र पिता की आज्ञा मानकर वनमें गये उसमें कौनसी महत्ता है। इसतरह लोगों को लगती उस शंका को दूर करने और राम का वास्तववादी चरित्र जनसमाज के आगे रखने के लिए वाल्मीकि ने रामायण की रचना कि। वाल्मीकि को मनुष्यों की टोच दिखानी थी। राम विष्णु के अवतार थे। किन्तु रामायण पढ़ते लगता है कि खुद देवत्व भूल गये हैं। वाल्मीकिने उनके मनुष्यत्व का द्योतक हर्ष-शोक का वर्णन किया है। व्यक्तिगत अभ्युदय का जो आनंद होता है उसका वर्णन आत्मीय व्यक्ति के पास करने के लिए व्यक्ति कैसा उतावला बनता है। अपना राज्याभिषेक होनेवाला है यह जानते हि राम भी अपनी आत्मीय व्यक्ति को यानि की पत्नी सीता को बताने दोडते गये। अयोद्याकांड में रामचन्द्र के आनन्दोल्लास का वर्णन है।

बाललीलाएः

श्रीरामचन्द्रार्चनम में उनसठ और साठवें श्लोक में कविने भगवान श्री राम की बाल्यावस्था का निरुपण किया है।

माता चलन्तं च पुनः पतन्तं

दत्वा भुजं वकित सुचुभब्य निष्टम्।
पीयूषपानं नुं तथा रसज्ञे
श्री राम सत्यव्रत राघवेति।।
चन्द्र ग्रहीतुं जननी रुदन्तम्।
स्थालीजले बिम्बमदर्शयप्प।
बिम्बेऽपि लीलारतमाजुहाव
श्री राम सत्यव्रत राघवेति।।

एकबार माँ कौशल्याने रामजी को श्रृंगार किया। दूध पिलाकर पालने में सुला दिया रामजी सो गए। माँने स्नान किया पूजा के वस्त्र पहनकर ठाकुरजी की पूजा की। नैवद्य रह तो नहि गया ना यह सोचकर वापस रसोईघरमें गए। उस वक्त एक घटना घटी।

कौशल्या माँ रसोईघर में से ठाकुरजी के मंदिर में आईंतोवहाँ रामजी को खाते हुए देखा। रामको तो मैंने पानलेमें सूलाया था। यहाँ कैसे? ऐसा सोचकर तुंरत जाकर पालने में देखते है। रामजी उसमें सोये हुए थे माँ को आश्चर्य हुआ।

पृथ्वी पर होनेवाले त्रास को दुर करने के लिए पृथ्वी पे अवतार धारण कनरेवाले देवोके देव श्री रामने प्रसन्नता से पृथ्वी कोगोदमें लिया। विश्वामित्र के यज्ञ की सुरक्षाकरने के लिए बालक होने के बावजूद भी जिन्होंने दानवोका नाश किया।

''हत्वाऽसुरान रक्षितवान् मुनीन्द्रान्
येन कृतं रक्षणं धार्मिकाणाम्।''

अर्थात्

दानवोका नाश करके श्रेष्ठ मुनियों की रक्षा की उन्होंने धार्मिक लोगों का रक्षण किया। यहाँ गीता का परित्राणाय साधुना.....। इस श्लोक की याद दिलाता है।

इस तरह अपने गुरुजन एवम् वडिलो का मान रखनेवाले और सेवा करने में हंमेशा तत्पर रहते हैं।

धनुष्यभंगः–

कविने श्रीरामचन्द्रार्चनम् स्तोत्र साहित्य में लिखा है कि ''चापं सुखं तं च बभञ्जयश्प।'' ''जिन्होने धनुष्य की पनछको सरलता से तोडदिया।''

तुलसीदासजीने बालकांड में लिखा है कि भगवान राम को आदेश दिया गया है। राम खड़े हुए। विश्वामित्र को प्रणाम किया आसनसे नीचे उतरे। पूरे मंडप में सन्नाटा छा गया। सूर्योदय हो और तालाब में कमल खील उठे इसतरह राम आगे आये और बैठे हुए राजवीयों की आज्ञाओं का पूर्णविराम आ गया।

''उदिति उदयगिरि मंच पर, रघुबीर बालपतंग।

बिहसे संत सरोज सब, हरषे, लोचन भृंग।।''

इस और हजारो नेत्र राम और धनुष के उपर मंडराये है। विश्वामित्रजी उस तरफ देख रहे हैं। एक ओर लक्ष्मणका आनंद समाता नहीं है। लक्ष्मणजी आज बहुत खुश है तो जनक महाराज सारांक है। वे अभिमानी राजाओंको इर्षा की नजर से देख रहे है। सज्जन लोग मन्नते मान रहे है। नगरी का नारीवृंद शिव धनुष का वज़न कम हो जाये और राम के हाथो से ही तूटे और जानकी रामको जयमाला पहनाकर अर्पण हो ऐसी विधातांसेप्रार्थना करती है।

भगवान रामने धनुष्य के एक छेडे को दबाया और दूसरा छेडा आकाश में ऊँचे गया। उसकी गति तीव्र और इतनी तेज़ थी कि उससे मंडप में बिजली जैसा चमकारा हुआ। बिजली का चमकाराहोने की वजह से सबकी आँखे धूंधली पड गई थी। ठीक उसी समय भगवानने लीला करते हुए अपने भूजायें लंबी की और प्रभुने धनुषको दूसरे छेडे से खींच लीया, उसी समय बहुत ही भयंकर आवाज हुइ, वह आवाज इतनी भयंकर थी कि तुलसीदासजी कहते है कि, स्वर्ग में देवताओं ने कान के उपर हाथ रख दिए। विध्यांचल और हिमालय में महात्माओं के ध्यानभंग हो गए। मेरु शिखर की चट्टाने तूटने लगी, सागर उछल पडा औरतट के बाहर नीकलने लगा। पृथ्वी काँप ऊठी, सिंहासन ध्रुज गए, सूर्यनारयण के घोडे रथ लेकर पूर्व में से पश्चिम में जा रहे थे तो उसके बदले आवाज सुनकर दक्षिण में चले गए।

इस तरह भगवानने धनुष-भंग किया, लोग नाचने लगे। धनुष्य तूटा तो लंका में बैढी हुई रावण की पत्नी मंदोदरी की चुडियाँ जैसे तूटने की तैयारी हो गई। इसतरह रामने शिवधनुष का भंग किया।

राजा बनने का प्रस्ताव आया तब भी जिसने सभी इन्द्रियों के उपर काबू पाया है, वैसे स्थितप्रज्ञ रहकर उनको देखकर लोग वे देव को सत्यव्रती राघव श्रीराम कहकर स्तुति करते है। उपरांत चौदा वर्ष वनमें जाने की बात आई तब भी स्थितप्रज्ञत्व रहकर पिता की आज्ञा मानकर वे खुशी-खुशी बनमें जाना पसंद करते है। यहाँ भगवद्गीता का आदर्शपुरुष स्थितप्रज्ञ का उदाहरण भगवान श्रीराम है।

कवि भगवान श्री राम की लीला को प्रकट करते हुए बताते है कि मयाावी सुवर्ण मृग को जानते हुए भी लीला करने के हेतुं से ही उसके पीछे दोडे। ऐसे लीलावतारी है। चंद्र के समान मुखवाली जानकीको स्मरण में चंद्र भी भयानक लगते है ऐसे श्री राम है। जिसमें प्रेममय परम पतित्व है एसे सत्यव्रती राघव श्री राम स्मरणीय है।

सीता के वियोग में अति उग्र विलाप करनेवाले राम के दुःखको देखकर पत्थर भी रोते है। ऐसी लीला में अत्यंत लीन होने के बाद भी जो आसक्ति रहित है। यहाँ भवभूति के उत्तररामचरित नाटक में- ''अपि ग्रावा रोदित्यपि दभति वज्रस्य हृदयम्।'' यह पंक्ति याद आती है। रामका सीता विरह यहा अतिउग्र असह्य देखने को मिलता है।

बादल का कार्य हंमेशा दूसरों के लिए होता है। उसका भेद किये बिनाहंमेशा समानता से बरसते देखकर उस परमार्थी को मेघ श्यामवर्ण स्वीकार के प्रसन्न होनेवाले श्री राम है। राम को मेघ के साथ सरखाया गयाहै। जैसे बादल दूसरों के लिए बरसते है वैसे रामने भीहंमेशा दूसरो के लिए समस्त जीवन समर्पित किया है। इस तरह यहाँ भगवान राम मेघवर्ण क्यों है? उसका कारण यहाँ बताया गया है।

मोहान्धकारस्य निवारणार्थ
सत्यस्य तत्त्वस्य च सेवनार्थम्।
दिव्यस्य मंत्रस्य जपादिमत्वम्
श्रीराम सत्यव्रत राघवति।।

अर्थात्

कवि यहाँ मोहरूपी अंधकार के निवारण के लिए और सत्य तत्व का सेवन करने के लिए श्रीराम सत्यव्रती राघव जैसे दिव्य मंत्र के जाप इत्यादि करने चाहिए। भयंकर कलियुग में भी सबको सुख देनेवाले और सबके दुःखो को पीनेवाले और 'श्रीराम' यह मंत्र सभी प्रकार से सुख देनेवाले और दुःख को दूर करनेवाले है। पापो के दोषों को दूर करनेवाला साधन उत्तम सुख देनेवाले के पास करनेवाली याचना और कल्पना न हो सके एसा पद देनेवाले को 'श्रीराम' ऐसे मंत्र से उनकी स्तुति करनी चाहिए। सभी अवतारों में धर्मकार्य करेवाले आर्य सत्यव्रती राघव श्री राम के पवित्र नाम से धार्मिक लोग स्तुति करते है।

उपसंहारः–

श्री रामचन्द्रार्चनम् स्तोत्र में भगवान श्री राम के स्वरुप का अद्‌भूत वर्णन किया है। श्रीराम का वर्णन करनाअसंभव है। फिर भी किसी भी प्रकार से श्री राम के स्वरुप के वर्णन में कमी नही आई, क्योंकि श्री रामचन्द्रार्चनम् में श्री राम के स्वरुप को संपूर्णतः टूंकसार देकर सभी तरह से प्रस्तुत किया है। इसतरह यहाँ श्री राम के स्वरुप का वर्णन किया गया है।

पादटीप

१. श्री रामचन्द्रार्चनम् लेखकः डॉ.वासुदेव वि. पाठक
२. रामायण दर्शन लेखकः प.पू. पांडुरंग शास्त्री
३. सुंदर रामायण लेखकः मोरारीबापु कथित
४. उत्तर रामचरित लेखकः महाकवि भवभूति